भगवत् कृपा

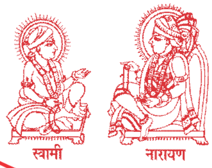

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 23 अंक : 3 | रविवार, 26-3-2000 | वार्षिक चंदा : 50-00

अहो ! रामनवमी का मंगलकारी दिन........

12 अप्रैल यानि–पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान स्वामिनारायण की जयंती का महामंगलकारी दिन नज़दीक आ रहा है..... अयोध्या के पास 'छपैया' गांव में चैत्र शुक्ला नवमी के दिन रात को दस बजे पूर्ण पुरुषोत्तम धरती पर प्रगट हुए। पिता का नाम धर्मदेव और माता का नाम भक्तिमाता। भगवान हमेशा धर्म और भक्ति की गोद से ही प्रगट होते हैं ना ! जहां धर्म है, जहां भक्ति है, वहीं भगवान प्रत्यक्ष विराजमान रहते हैं।

एक बार धर्मदेव और भक्तिमाता बालक घनश्याम को गोद में लेकर बैठे थे। पिता धर्मदेव ने एक पीढ़े पर छुरी, सोना मोहर और गीता–ये तीनों चीज़ें रखी। सामान्यतः छोटे बच्चे चमकती हुई चीज़ की ओर आकर्षित होते हैं, लेकिन बाल स्वरूप घनश्याम ने गीता उठाई और उसे खोल कर अपने छोटे-छोटे हाथों से उंगली घुमाने लगा। पिता धर्मदेव विद्वान थे, उनकी विद्वत्ता काशी तक प्रसिद्ध थी। उन्होंने कुतुहल से अपने पुत्र द्वारा खोला हुआ पृष्ठ देखा। उनके आश्चर्य का पार ना रहा क्योंकि उस पन्ने पर भगवान के ये वचन थे–

''यदा-यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे-युगे॥''

इस प्रकार बचपन में ही धरती पर अपने प्रगट होने का रहस्य श्रीजी महाराज ने अपने इस चरित्र से बता दिया था। केवल ग्यारह साल की छोटी उम्र में उन्होंने गृहत्याग किया और लगभग पूरे भारत का पैदल भ्रमण करते-करते अनेकों की तपस्या का उन्हें फल देकर उनका उद्धार किया। आखिरकार–अपना कार्यक्षेत्र गुजरात (सौराष्ट्र) में गढडा गांव को चुना..... जीवुबा-लाडुबा, दादाखाचर जैसे भक्तों के अत्यधिक भाव के कारण लगभग 30 वर्ष तक गढडा में रहे।

श्रीजी महाराज का गढडा में प्रताप धीरे-धीरे फैलने लगा। कई सिर्फ जिज्ञासा से, तो कई परीक्षा लेने या दूसरे किसी भी भाव से उनके दर्शन करने आता तो उसे अद्भुत अनुभव होते। किसी को समाधि हो जाती और समाधि में उसको खुद के ईष्टदेव के दर्शन होते। वे स्वरूप श्रीजी महाराज के स्वरूप में से प्रगट होते दिखाई पड़ते और वापिस श्रीजी महाराज के स्वरूप में लीन हो जाते। इससे मुमुक्षुओं–भक्तों को निश्चय होता गया कि श्रीजी महाराज साक्षात् भगवान हैं। कईयों को तो उनके संकल्पों का उत्तर मिल जाता..... कईयों के संकल्प पूरे होते और जिन्हें यह सब देखने के बावजूद भी अपनी बुद्धि का ही गुमान रहता, तो वे यूं सोचते कि स्वामिनारायण तो वशीकरण–हीप्नोटीझ्म करते हैं या कोई मंत्र का गुटका जरूर उनके पास है जिससे उनके दर्शन करने आये को अष्टांग योग की साधना किए बिना ही समाधि हो जाती है। कई कितने मुमुक्षु तो श्रीजी महाराज का प्रताप देखकर उनकी शरण में जाते, जबकि ऐसे कई गिने-चुने 'यह तो धूर्त है।' यूं समझ कर श्रीजी महाराज की प्रसिद्धि को डिगाने के लिए लगे रहे। काठियावाड़ का काठी समाज धीरे-धीरे श्रीजी महाराज के अद्भुत प्रताप से आकर्षित होकर उनकी शरण में जा रहा था।

यह बात धीरे-धीरे भावनगर तक पहुँच गई। भावनगर के महाराज ठाकुर वखतसिंहजी गोहिलकुल दीपक थे, प्रजावत्सल थे.... उन्हें यह समाचार मिला कि गढडा में उत्तर हिन्दुस्तान में से एक इक्कीस-बाईस वर्ष का साधु आया है। बापू एभलखाचर के दरबार में शरण ली हुई है। जो उसका

दर्शन करने जाते हैं, उसे ही वह समाधि करवाता है और खुद को भगवान की तरह पुजवाता है। तो इस धूर्त को जल्दी निकाल देने जैसा है। वखतसिंहजी बापु को रोज़-बरोज़ ऐसी खबरें मिलती थी। सो, उन्हें भी भ्रम हुआ कि कलयुग में भगवान कहां से ? युग-युग में भगवान अधर्म का नाश करने और धर्म का संस्थापन करने प्रगट होते हैं, यह विश्वास उसे रहा नहीं। सो, उसे हुआ कि इस पाप को जल्दी ही खुला कर देना चाहिए।

इतने में उसे खबर मिली कि जूनागढ़ नवाब के पास से खूब सम्मान पाकर खाण गांव के कवि लाडुदानजी भावनगर पधारे हैं........ यह सुनकर वखतसिंहजी खुश हुए। कविश्री के लिए उत्तम प्रकार की ठहरने की रजवाड़ी व्यवस्था, खानपान इत्यादि की तैयारी करवा दी..... सभा में बुलाने के लिए कविश्री के लिए पालकी व नौकर-चाकर भेज दिए। कविश्री के आने पर वखतसिंहजी खुद स्वागत करने गए.... फिर खुद के आसन के साथ के आसन पर उन्हें बिठाया।

कविराज को सम्मानित करने वखतसिंहजी ने कविराज के लिए आभूषण, पोशाक वगैरह तैयार करने के लिए सोनी महाजन को बुलाया। सोनी महाजन तुरन्त ही कविराज का नाप लेने आ पहुँचा। सोनी महाजन के माथे पर उर्ध्वपुड्र तिलक और बीच में गोल चांदला देख कर कविराज ने पूछा कि 'ऐसा नवीन टीका पहली बार देखा; यह किस पंथ का है ?' वखतसिंहजी महाराज भी यह सुनकर चौंके। महाजन के बोलने से पहले ही वखतसिंहजी बोल उठे कि–'कविराज ! कहते हैं– गढडा में भगवान प्रगट हुए हैं। पर, कुछ चालाकी से उसने ऐसे भोले लोगों को फंसाया है। आप गढडा जाकर ये सहजानंद की परीक्षा लेकर सबका भ्रम तोड़ दो ताकि भोले लोग फंसने से बच जाएं।'

कविराज ने वहां जाने के लिए तुरंत हाँ भर दी और गढडा जाने की तैयारी करी। इतने में उसके मामा भी उन्हें लेने पहुँचे। कविराज ने अपने मामा को गढडा की सारी बात करी– 'स्वामिनारायण नाम से कोई भगवान प्रगट हुआ है, उसकी पोल खोलने गढडा जाना है। आप भी साथ आओ और दो दिन में तो हम यहां वापिस आ जाएंगे।' यूं गढडा जाने के लिए कविराज तैयार हो गए। घोड़े की लगाम हाथ में पकड़ी थी कि सोनी महाजन वहां आया, तो कविराज ने कहा कि कोई नाप लेना बाकी रह गया हो तो ले लो। सोनी महाजन ने कहा–'कोई नाप लेना बाकी नहीं रहा, लेकिन आप गढडा जा रहे हो तो अपना नाप संभालना–वह ना निकल जाए।' यह सुनकर कविराज का पारा तो एकदम चढ़ गया और थोड़ी ही देर में कविराज और उसका मामा उड़ती धूल में अदृश्य हो गये !

गढडा जैसे-जैसे नज़दीक आने लगा तो कविराज के मन में विचार उत्पन्न होने लगे कि सच में भगवान होंगे तो ? किस लक्षण से उन्हें पहचानूंगा ? आखिर उसने सोचा कि– 'यदि स्वामिनारायण सच में भगवान होंगे, तो वे अंतर्यामी होने चाहिए और उनके चरणों में सोलह चिह्न भी होने चाहिए।' फिर उसने मन ही मन संकल्प किया कि–'स्वामिनारायण के गले में गुलाब का हार हो और वे मुझे मेरा नाम लेकर बुलाएं व मुझे हार पहनाएं, तो मैं मानूंगा उन्हें।' पर, वह स्वयं ही हंसा कि–इस ऋतु में गुलाब कहां से निकालेंगे ?

उसके मन का घोड़ा तो वेग में और दौड़ने लगा कि– 'काले कम्बल के ऊपर श्रीमद् भागवत् रख कर पूर्वमुख से बैठ कर वे कथा करते हों।' वह इतना तो समझता था कि मंत्र, तंत्र या मैली विद्या या भूतप्रेत की साधना वाले को भागवत् के साथ कोई लेन देन नहीं होता। यूं सोचते करते गढडा पहुँचा।

गढडा गाँव में प्रवेश करके उसने वहां के नगरवासियों से स्वामिनारायण भगवान के बारे पूछा.... उसे देखकर सभी ने सोचा कि कोई राजसी व्यक्ति भगवान स्वामिनारायण के दर्शन के लिए आया है। वहां एभलखाचर के दरबार में श्रीजी महाराज नीम के वृक्ष के नीचे बैठे थे। उनके गले में गुलाब का हार था। कानों में गुलाब के पुष्प के गजरे बांधे थे। गुलाबों से भरी श्रीहरि की मूर्ति अत्यंत लुभावनी लगती थी। उनके आगे एक छोटी चौकी रखी थी। उस पर काला कम्बल बिछा हुआ था। उस पर श्रीमद् भागवत का पुस्तक था और महाराज उसमें से रहस्य की बातें समझ रहे थे।

ठीक उसी समय कविराज लाडुदानजी और उनके मामा ने दरबार में प्रवेश करा। एभलखाचर उन्हें मिले और हाथ पकड़ कर महाराज के पास ले आए। कविराज की दृष्टि तो श्रीजी महाराज की मूर्ति को देख कर उनके स्वरूप में ही स्थिर हो गई। मानो पूर्व की पहचान हो ! मधुरभाव से महाराज कविराज की ओर देखते रहे और बोले–''आओ लाडुदानजी !'' यूं कहकर अपने गले का गुलाब का हार उसे पहनाया। लाडुदानजी को लगने लगा कि नमक की डली पिघलती जा रही है। कविराज लाडुदानजी तो श्रीजी महाराज की मूर्ति का एकटक दर्शन कर रहे थे और मामा भानजे को देख रहा था। उसे डर लग रहा था कि ये स्वामिनारायण ने मेरे भानजे पर कोई जादू-टोना तो नहीं करा ना ? वह 'मां जगदम्बा–मां अम्बा' का जाप करने लगा।

फिर श्रीजी महाराज ने तकिये का सहारा लेकर पैर फैलाए। कविराज ने चरण देखे तो सामुद्रिक शास्त्र के जानकार कवि ने श्रीजी महाराज के चरण चिह्न पहचान लिए...दो पल पहले राजसी जैसे दिखाई देते इस पुरुष का रजोगुण मानो टल गया हो ऐसा सभी को लगा और....ऐसी भावविभोर अवस्था

में महाकवि को श्रीजी महाराज की कृपा से समाधि हो गई। समाधि में उन्हें श्रीजी महाराज के दिव्य अक्षरधाम का दर्शन हुआ।......उन्हें सभी अवतारों के श्रीजी महाराज में दर्शन हुए और फिर वे सभी अवतार श्रीजी महाराज में लीन होते दिखाई दिये। समाधि की स्थिति में कविराज को देखकर उनके मामा की उदासी बढ़ गई। श्रीजी महाराज ने उसे आश्वस्त किया कि–'भानजे को कुछ नहीं हुआ, उसके लिए उदास नहीं होना।' लेकिन मामा ने तो गुस्से में कमर में से आत्महत्या करने का ढोंग दिखाते हुए बड़ा चाकू निकाल लिया। सो, सभा में 'हाहाकार' मच गया.....पर श्रीजी महाराज ने तुरंत मामा के नाड़ी प्राण खींच लिए, उसका हाथ वहीं रुक गया। इतने में कविराज समाधि अवस्था में से जग गये। उन्होंने श्रीजी महाराज के चरणकमल में साष्टांग दंडवत् प्रणाम किया। श्रीजी महाराज ने खड़े होकर उन्हें गले लगाया..... आंखों में हर्षाश्रु भर कर भावविभोर स्थिति में कविराज बोले–'यही, वह स्वरूप ! प्रभु ! मैंने दिव्य अक्षरधाम में यही स्वरूप देखा था। इसी स्वरूप में से मत्स्य, कूर्म, वाराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, रघुनाथजी और श्रीकृष्ण सभी अवतारों को निकलते मैंने देखा; फिर इसी स्वरूप में उन सभी को लीन होते देखा। प्रभु ! आपने मुझे निहाल कर दिया।' श्रीजी महाराज ने उसके सीने पर हाथ फेर कर कहा–'कविराज ! इस प्रसंग, इस स्वरूप को दिल में बिठा लेना।' 'बैठ ही गये हो–महाराज ! अब निकले ऐसा नहीं है। नमक की पुतली समुद्र में समा गई है। अब बाहर आने की गुंजाईश रही नहीं है।'

इतना कह कर लाडुदानजी ने मामा की ओर देखा। उन्हें काष्ठवत देख कर उन्होंने श्रीजी महाराज को कहा–'इन्हें क्या हुआ ?' श्रीहरि हंस कर बोले–'चारण खुद को मारने जा रहे थे लेकिन मरना किसके हाथ में है ?' श्रीजी महाराज ने मामा की ओर दृष्टि करी और वो सचेतन हो गए ! तो कविराज मामा को बोले–'मामा, मामा ! यह क्या करने जा रहे थे ? चारण जाति अग्नि जैसी जरूर होती है, लेकिन यहां हिमालय के समान ये प्रभु साक्षात् बैठे हैं। यहां तुम्हारा कुछ नहीं चलेगा।' यूं कह कर मामा की ओर से श्रीजी महाराज से माफी मांगी। फिर एभलखाचर उन्हें अपने ठहरने के स्थान पर ले गये।

आगे जाकर इन्हीं लाडूदानजी को महाराज ने साधु की दीक्षा दी और 'ब्रह्मानंदस्वामी' नाम रखा। महाराज के परमहंसों में ब्रह्मानंदस्वामी का विशेष स्थान था। ब्रह्मानंदस्वामी ने संप्रदाय में रह कर कई काव्य रचनाएं करी। गुजराती कविता–साहित्य में आज भी ब्रह्मानंदस्वामी का नाम अविचल है। मंदिर निर्माण का कार्य भी महाराज ब्रह्मानंदस्वामी को सौंपते थे। वड़ताल, मूली और जूनागढ़ के मंदिरों का निर्माण ब्रह्मानंदस्वामी की अनुपम देन है।

ब्रह्मानंदस्वामी के इस प्रसंग को शायद हम चमत्कार की दृष्टि देखें। पर, यह चमत्कार नहीं था..... बल्कि भीतर के रजोगुण का परिवर्तन करके एकमात्र प्रभु की मूर्ति स्थापित करने का एक अनोखा हुन्नर था।

यूं श्रीजी महाराज ने अनेकों के भीतर का परिवर्तन करके मोक्ष के मार्ग–प्रभु के मार्ग पर अग्रसर किया...... हमें इसी परंपरा के वारिसदारों की गोद में बैठना मिला है। तो, **रामनौमी** के इस मंगल अवसर पर 'स्व' का समर्पण करके–जन्मों की अस्मिता टाल कर भीतर में प्रभु प्रगटाने का पात्र बनें यही अन्तर की प्रार्थना......

✡✡✡✡✡

अनिर्देश का पुनः नामकरण

इस बार 26 मार्च 2000 को प.पू. गुरुजी की 63वीं जयंती निमित्त मंदिर के पीछे प्रांगण में ज़हाज़ के रूप में स्टेज बनाया था। उस ज़हाज़ का नाम **ताड़देव** रखा था। यह नाम रखने के दो कारण थे कि एक तो प.पू.स्वामिजी कई बार कहते हैं कि ताड़देव यानि आत्मीयता से जुड़े सारे गुणातीत समाज की 'गंगोत्री'! गंगोत्री यानि–गंगा के निकलने-फूटने का उद्भव स्थान......सभी केन्द्रों की शुरुआत ताड़देव से ही हुई है। यूं इन सब की नींव की ईंट ताड़देव है। वह हम कभी भूला नहीं पायेंगे....दूसरी ओर प.पू.गुरुजी के दिल में ताड़देव के प्रति एक अलग ही आकर्षण है। ऐसा नहीं कि प.पू. काकाजी स्थूलरूप से थे, तब तक ही रहा हो; बल्कि प.पू. काकाजी के शरीर छोड़ने के बाद भी ताड़देव के भाईयों के प्रति प.पू. गुरुजी विशेषरूप से ढले हमने देखे हैं... सो, इस भावना से प.पू. गुरुजी को प्रसन्न देखने हेतु 'ताड़देव' नाम रखा था।

और.....इससे अधिक प.पू. गुरुजी ने फिर 26 मार्च की शाम को रुंधी हुई आवाज़ से शुरुआत में ही कहा कि–मैं वैसे यूं उत्सवों पर होती डेकोरेशन इत्यादि देखने करने नहीं आता, लेकिन जब से मैंने यह ज़हाज पर 'ताड़देव' लिखा हुआ देखा, तब से मैं अपने आप को रोक नहीं पाया और इसी लिए मैंने पूरे दिन में कम से कम 15 चक्कर यहां के काटे, क्योंकि बार-बार मुझे 'ताड़देव' देखने का मन हो गया..... ताड़देव की

महिमा समझते हुए प.पू. स्वामिजी ने भी इस बार कहा था–
ताड़देव यानि–जहां केवल संबंधयोग !
ताड़देव यानि–अक्षरधाम !
ताड़देव संबंध, भजन व बिना कोई भेदभाव की सेवा का समन्वय !

सो, 27 मार्च को तो प.पू. गुरुजी ने सभी की सहमति से मंदिर के कॉम्पलेक्स का नाम जो कि '**अनिर्देश**' था, उसे बदलकर 'ताड़देव' रखने का सोच लिया। यूं अब सभी दिल्ली–अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर के कॉम्पलेक्स को '**ताड़देव**' के नाम से जानेंगे। काकाजी लेन तो पल-पल प.पू. काकाजी की स्मृति कराती ही थी, लेकिन अब 'ताड़देव' नाम तो यह अहसास कराता रहेगा कि गुणातीत समाज की जहां से शुरुआत हुई उसे हम कभी भूलें नहीं।

✡✡✡✡✡

ताड़देव की गतिविधियाँ

★ पिछले तीन-चार महीने से प.पू. स्वामिजी की तबियत नादुरुस्त होने के समाचार सुनकर प.पू. गुरुजी खूब चिन्तित रहा करते थे....प.पू. गुरुजी बहुत विचार में रहते कि प.पू. स्वामिजी को मैं जरुर देख आऊं। इतने में प. पू. स्वामिजी ने कहलवाया कि वे मुंबई हॉस्पिटल में चैकअप के लिये जा रहे हैं, तो प.पू. गुरुजी 18 फरवरी की सुबह की फ्लाईट से प. पू. स्वामिजी की तबियत देखने मुंबई पहुँच ही गए। प.पू. स्वामिजी को मिल कर, उनके दर्शन करके प.पू. गुरुजी को शांति हुई क्योंकि अब प.पू. स्वामिजी की तबियत काफी सुधार पर थी....दो दिन मुंबई 'ताड़देव' रुक कर 19 फरवरी की रात को दिल्ली वापिस आए।

★ 7.11.'77 के एक पत्र में प.पू. काकाजी ने प.पू. गुरुजी को लिखा था कि–'**हे आनंदस्वामिजी–अब हरियाणा और पंजाब का उद्धार करो, उद्धार करो.....**' सो, प.पू. काकाजी को प्रसन्न करने की एकमात्र भावना और उनका वचन झेलने के लिए प.पू. गुरुजी कई सालों से पंजाब आते-जाते रहते हैं।

शिकागो से प.पू. काकाजी, प.पू. गुरुजी के प्रति खूब लगाव वाली एक मुक्त पू. नयना बहन दिल्ली आ रहे थीं। तो, प.पू. गुरुजी को विचार आया कि प.पू. काकाजी द्वारा तैयार किए समाज को–उनकी भक्ति भावना को देख कर पू. नयना बहन खूब प्रसन्न हो जाएंगी। इसी भावना से प.पू. गुरुजी ने 22 से 24 फरवरी तक का पंजाब का प्रोग्राम बनाया.... पू. नयना बहन संयोगवश पहुँच नहीं पाए। पर, प.पू. गुरुजी को तो भक्तों के संकल्पों को पूरा करने पहुँचना ही था..... सो, पूर्व निश्चित प्रोग्राम के मुताबिक 22 फरवरी की सुबह शताब्दी से लुधियाना के लिए निकले। ट्रेन में प.पू. गुरुजी ने तीन घंटे तक लगातार '**मोती बिखरे चौक में**' पुस्तक के लिए प.पू. काकाजी के प्रवचन की हस्तलिपि को ऑडियो कैसेट सुनकर चैक किया। लुधियाना स्टेशन पर पहुँचे तो लुधियाना, सबद्दी, जगरांव, मोगा के हरिभक्तों प.पू. गुरुजी के स्वागत के लिए आए हुए थे.... वहां से प.पू. गुरुजी मुन्शीरामजी के आरे पर होते हुए सीधे जगरांव प.भ. अशोकजी के घर पहुँचे.... दोपहर को ठाकुरजी का भोग लगाकर थोड़ा विश्राम किया..... शाम को प.भ. अशोकजी के यहां सत्संग सभा का आयोजन था। प.पू. गुरुजी ने मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामिजी के जीवन चरित्र में से एक प्रसंग पढ़वाया; जिसमें मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामिजी की भक्तों के प्रति आत्मीयता का अद्भुत दर्शन था। एक भक्त को रुई के व्यापार में अचानक बहुत नुकसान हो गया, तो मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामिजी ने मौके पर मंदिर से मदद करके उनका कारोबार ठीक करवाया.... यह है गुणातीत रीति ! लगभग एक घंटे तक प.पू. गुरुजी ने सत्संग की बातें करी। करीब 250 हरिभक्तों ने इस सभा का लाभ लिया.... फिर सभी प्रसाद लेकर विदा हुए।

23 फरवरी की सुबह जगरांव के प्रसिद्ध गज़रेला वाले (गाजर के हलवे वाले) प.भ. रामलालजी (अशोकजी) के घर नाश्ता करके प्रसिद्ध गुरुद्वारे महतियाना के दर्शन करने गए, जहां बहुत ही जीवंत स्टेच्युज़ बनाकर सिक्खों की कुर्बानी का हुबहु दर्शन है। प.पू. गुरुजी जब भी जगरांव जाते हैं, तो वहां अवश्य जाते ही हैं। फिर शाम को जगरांव के चार-पांच घर चरण डाल कर...... रात को प.भ. गगनजी के नए मकान में मुहूर्त निमित्त गये और वहीं पर भजन-कीर्तन के पश्चात् करीब 200 हरिभक्तों ने रात का प्रसाद लिया।

24 फरवरी की सुबह जगरांव के भक्तों से विदाई लेकर सवद्दी कलाँ पहुँचे। वहां पुराने जोगी प.भ. दिलीपचन्दजी के लड़के प.भ. सुरेशजी एवं देवजी की दुकान व घर पर गये। प.भ. सुरेशजी व सारे परिवार की भावना-अहोभाव देखते ही बनता था कि अहो हो ! हमारा कैसा अहोभाग्य ! सवद्दी से फिर मुल्लापुर गांव पुराने जोगी प.भ. झंझी साहब के चावल के श्रेडर पर गए। वहां साथ की जमीन पर फूल छांट कर आशीर्वाद दिए..... और अल्पाहार करके मुल्लापुर में ही प.भ. सवद्दी वाले सुरेशजी के मित्र महेन्द्रजी के घर दोपहर को ठाकुरजी का थाल किया..... प.भ. महेन्द्रजी ने करीब 300

हरिभक्तों के खाने की व्यवस्था करी थी। नए होने के बावजूद प.पू. गुरुजी के प्रति उनका भक्तिभाव देखकर सभी की आंखें नम हो गईं। वहां प.पू. गुरुजी ने 'स्वामिनारायण धर्म'–सच्चे संत की पहचान की थोड़ी बातें करी। खाना खाने के बाद मुल्लापुर में ही रहते प.भ. सुरेशजी (सवद्दी) के साले साहब के घर पधरामनी के लिए गए।

वहां से निकल कर लुधियाना प.भ. गुप्ताजी के घर पहुँचे..... यहाँ लुधियाना के हरिभक्तों को दर्शन का लाभ दिया और प.भ. टिम्मी की नई दुकान पर गए। प.भ. टिम्मी की दुकान से प.भ. रामपालजी के घर उनकी माँ के अक्षरनिवास निमित्त गए.... रामपालजी के घर से निकल कर शाम की 'शताब्दी' ट्रेन से निकल कर रात को करीब 11.30 बजे दिल्ली मंदिर वापिस लौटे। प.पू. गुरुजी चाहे दो ही दिन-खूब थोड़े समय के लिए पंजाब गए। पर, सभी भक्तों का आनन्द समाता नहीं था..... सभी गद्गद् जैसे हो गए थे। संयोगवश मुंबई के अपने आत्मीय स्वजन प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी भी पहली बार प.पू. गुरुजी के साथ पंजाब ट्रिप पर आए थे... पंजाब के भक्तों की प.पू. गुरुजी के प्रति इतनी अधिक भावना, श्रद्धा व भक्ति देखकर प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी का दिल भर आया.... कि अहो हो ! प.पू. काकाजी–प.पू. गुरुजी के अथाह परिश्रम से आज कैसा आत्मीय समाज पंजाब की धरती पर भी तैयार हो चुका है।

★ दिल्ली में प.भ. कीर्तिभाई जानी परिवार के संबंध से सत्संग में आए मुंबई के प.भ. निरंजनभाई दवे का **60वां जन्मदिन** यानि–हीरक जयंती का छोटा उत्सव ताड़देव-मंदिर के प्रांगण में दिनांक 26 फरवरी को हर्षोल्लास से मनाया गया। उनके दोनों पुत्र प.भ. भाविन व प.भ. समीर से तो गुणातीत समाज के कई मुक्त परिचित हैं। प.भ. समीर, प.पू. गुरुजी से बिछड़ते हुए जिस प्रीति से छोटे बच्चों की तरह बिलख-बिलख कर रोते हैं, वह तकरीबन सभी जानते हैं। सौ. शोभना भाभी की छोटी बहन सौ. तृप्ति के साथ प.भ. समीर का विवाह हुआ, तब से धीरे-धीरे सारा परिवार प.पू. गुरुजी के साथ जुड़ता गया और भगवान स्वामिनारायण का आश्रित हुआ। आज इस सारे परिवार का केन्द्रबिन्दु प.पू. गुरुजी हैं। बहुत थोड़े समय में यह परिवार एक निजी परिवार बनकर आत्मबुद्धि व प्रीति के सत्संग की ओर दौड़ रहा है। 1993 में प.पू. काकाजी के अमृत महोत्सव के समय मुंबई में दिल्ली के करीब सवा सौ हरिभक्तों के लिए ठहरने करने की, खाने की व्यवस्था करके मौके की जो सेवा करी उसके फलस्वरुप इस परिवार में सत्संग की चिकनाई आई और.... मुंबई में प.पू. गुरुजी की 'बाईपास सर्जरी' के समय इस परिवार ने अपनेपन से जो सेवा करी थी, वह तो दिल्ली का समाज कभी भी भूल नहीं पाएगा।

प.भ. निरंजनभाई की दिली इच्छा थी कि 60वें जन्मदिन पर और जब साथ ही साथ वे बैंक की सेवा से निवृत्त भी हो रहे हैं, तब प.पू. गुरुजी से आशीर्वाद जरूर लेने हैं। सो, सारे परिवार ने दिल्ली आने का प्रोग्राम बना दिया। पहले तो यूं इतना ही प्रोग्राम था। पर, फिर प.भ. निरंजनभाई के दोनों पोते राजा–नंदिश को प.पू. गुरुजी द्वारा जनेऊ भी इसी दिन दिलवाने का सोचा। ताकि बच्चों को एक अविस्मरणीय स्मृति जीवन भर के लिए बन जाए कि दादु की हीरक जयंती पर हमारे यज्ञोपवीत संस्कार हुए थे ! इस प्रकार का सारा आयोजन बन गया।

26 फरवरी 2000 की सुबह आनंद व उल्लास के वातावरण में पहले दोनों बच्चों चि. राजा व चि. नंदीश की मुंडन विधि हुई। फिर प.पू. गुरुजी की निश्रा में पू. निमित्तस्वामी ने महापूजा में भक्तिभाव से सभी को भावविभोर कर दिया। सारा वातावरण पवित्रता व दिव्यता की खुशबू से महक रहा था.... जनेऊविधि पूरी होने के बाद सभी ने प्रसाद लिया।

शाम को ताड़देव-मंदिर में ऊपर ठाकुरजी के समक्ष 60वें जन्मदिन निमित्त सुशोभन करा हुआ था। थर्माकोल की कलात्मक डिज़ाईन बना कर प.पू. गुरुजी के लिए आसन बनाया था। दूसरी ओर 60 की फिगर के बीच गोल घूमते चमकते हीरे के नीचे प.भ. निरंजनभाई का आसन बरबस सभी का ध्यान सहज ही खींच रहा था। भजन-भक्ति के दिव्य वातावरण में कार्यक्रम की शुरुआत हुई। प.भ. वच्छराजभाई, प.भ. श्रेयसभाई (मुंबई) आदि वक्ताओं ने प.भ. निरंजनभाई के प्रति अपने दिली उद्गार व्यक्त किए। प.भ. निरंजनभाई बैंक ऑफ बड़ौदा में मैनेजर की पोस्ट से भी रिटायर हो रहे थे, उसे मद्देनज़र रखकर बैंक ऑफ बड़ौदा का मोनोग्राम का स्पेशियल केक बनाया गया था.... केक काटने के पश्चात् हीरे की शेप देकर बनाया गया कलात्मक हार प.भ. निरंजनभाई को प.भ. कीर्तिभाई ने पहनाया।

प.भ. निरंजनभाई को प.पू. गुरुजी ने बहनों द्वारा बनाया एक बहुत ही सुन्दर कार्ड अर्पण किया। जिस पर प.पू. गुरुजी ने उनके व उनके परिवार के प्रति अपनी भावना लेखनी से व्यक्त करी थी कि–

'मेरे ऑप्रेशन के समय आपके सारे कुटुंब ने जो निःस्वार्थभाव व आत्मीयता से सेवा करी है, वह तो मैं कभी भी भूल नहीं पाऊंगा। दूसरी एक बात कि–बैंक से रिटायरमेन्ट ले रहे हो, तो आप अपने को बुजुर्ग–रिटायर्ड नहीं मानना। अब ही तो सच्चा प्रवृत्तिमय जीवन जीना है और गुणातीत

ज्ञान में–अपने कोई आदर्श को नहीं, लेकिन सत्पुरुष को आदर्श रख कर उन्हें प्रसन्न करने, उनके ढंग से–उनकी रीति से, उनके होकर जीने जो निरन्तर झूझे वह सच में गुणातीत का युवक ! सो, अब तो प्रभु ने आपको-सच में ऐसे युवक बन कर आत्मा की सेवा के लिए प्रवृत्ति का अवकाश दिया है–मौका दिया है, यह सच में मानना...... तो, अब हर महिने–सवा महिने एक बार दिल्ली आकर मंदिर के एकाऊन्ट्स वगैरह का निरीक्षण करने की जिम्मेदारी उठा लेना.....'

अपनी इस भावना का निरुपण करते हुए ही प.पू. गुरुजी ने सभा में बातें करी और अंत में प.भ. निरंजनभाई ने खूब भावुक होकर प.पू. गुरुजी की महिमा का गान किया और प.पू. गुरुजी को विश्वास भी दिया कि वे उनके कहे अनुसार अपनी फर्ज अदा करेंगे...... प.भ. निरंजनभाई व समस्त परिवार तो हर्ष के–भावुकता के अश्रुओं से भीगा हुआ था कि ओहो ! ऐसे प्रभुधारक संत प.पू. गुरुजी हमारे जीवन में हर प्रकार से केवल सुखी करने ही आए..... हमें उनका भव्य संबंध हुआ–वही जीवन की परम धन्यता.... हमें निहाल कर दिया–हमें निहाल कर दिया ! और..... अपने दिलों में चिरंजीव स्मृतियों का खजाना भर कर 27 फरवरी की सुबह अत्यंत भावविभोर होकर फ्रन्टीयर से वापिस मुंबई जाने निकल गए !

(राग:— तुम इतना जो मुस्कुरा रहे हो)

गुणातीत अस्मिता जगा रहे हो
गुणातीत अस्मिता जगा रहे हो
मूर्ति काका की लूटा रहे हो
मूर्ति काका की लूटा रहे हो
गुणातीत अस्मिता....
संबंध से ही ब्रह्मरुप मानें
संबंध से ही ब्रह्मरुप मानें
हुन्नर साधु का सिखा रहे हो
हुन्नर साधु का सिखा रहे हो
मूर्ति काका की लूटा रहे हो
गुणातीत अस्मिता....
व्यापक में तुम, प्रेरक भी तुम्हीं हो
व्यापक में तुम, प्रेरक भी तुम्हीं हो
मुक्तों को तुम ही नचा रहे हो
मुक्तों को तुम ही नचा रहे हो
मूर्ति काका की लूटा रहे हो
गुणातीत अस्मिता....

परब्रह्म के धारक तुम गुरुजी
परब्रह्म के धारक तुम गुरुजी
ये तन्त्र दिव्य बना रहे हो
ये तन्त्र दिव्य बना रहे हो
मूर्ति काका की लूटा रहे हो
गुणातीत अस्मिता....
रीति, नीति, स्थिति काका जैसी
रीति, नीति, स्थिति काका जैसी
वर्तन से जीना सिखा रहे हो
वर्तन से जीना सिखा रहे हो
मूर्ति काका की लूटा रहे हो
गुणातीत अस्मिता जगा रहे हो
मूर्ति काका की लूटा रहे हो........

व्रतोत्सवसूची

(1) दि. 12.4.2000 बुधवार – रामनवमी, भगवान स्वामिनारायण का प्रागट्य दिन
(2) दि. 14.4.2000 शुक्रवार – एकादशी, व्रत

Air Mail
'**Bhagwatkripa**' Monthly Magazine
Despatched on 25/26 of every month
If undelivered please return to :—
Owner, Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKAR RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY-DELHI
'Tardeo', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Type Setting : **SHAYOKA Type Setting**
Rama Vihar, Delhi-110081 Phone: 5483035
Printed at : **Bharat Packaging and Allied Industries**
C-2/12,Mayapuri Industrial Area, Phase-II, New Delhi-110 064
Tel.: 5401210, 5402393

TO,